श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल
ब्रह्मज्ञान ही अमृत है
प्रेम ही जीवन है
वड़ोदरा

नारीत्व की गरिमा

अबला नहीं सबला

Happy Women's Day

श्री राजन स्वामी जी

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि 'भवानी शंकर बन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ' अर्थात् मैं श्रद्धा और विश्वास के स्वरुप पार्वती तथा शिव की वन्दना करता हूँ। इसका आशय है कि यदि नारी श्रद्धा है तो पुरुष विश्वास। पौराणिक ग्रन्थों में शिव को अर्द्धनारीश्वर भी कहा जाता है। श्रद्धा और विश्वास एक दूसरे के पूरक हैं। श्रद्धा के बिना विश्वास के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह वैसे ही है जैसे शक्तिमान का अस्तित्व उसमें निहित शक्ति पर ही निर्भर करता है। यदि पुरुष जन है तो नारी जननी है।

यदि पुरुष स्वयं को परिवार का पालक, पोषक समझता है तो नारी क्या पालिका और पोषिका नहीं है?

जगतस्त्रष्टा के लिये भी क्या बिना अपनी प्रकृति के सृष्टि रचना करना सम्भव है?

बृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है कि सृष्टि में सर्वप्रथम पात्र पुरुष ही था। वह पुनः दो रुपों में प्रकट हो गया- एक स्त्री और दूसरा पुरुष। उपरोक्त आख्यायिका यही दर्शाती है कि पुरुष का हृदय ही नारी के स्वरुप में व्यक्त हुआ है। नारी समर्पण, करुणा और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है। इसके बिना तो मानवीय गरिमा का कोई अस्तित्व ही नहीं है। संसार का बड़ा से बड़ा महापुरुष भी माता की कोख से ही पैदा होता है। सारा संसार उसके चरण छूकर या दर्शन पाकर स्वयं को गौरवान्वित समझता है किन्तु वह महापुरुष अपनी जननी की गोद में अपना सिर रखकर या उसके चरण छूकर स्वयं को धन्य-धन्य मानता है।

यही कारण है कि मनु जी ने कहा है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। यत्र नार्यास्तु तिरस्क्रियन्ते तत सर्वाः क्रियाः विफलाः।।' अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहीं पर धर्मात्मा विद्वानगण आनन्दित होते हैं। जहां नारी का तिरस्कार होता है वहां सभी कार्य विफल होते हैं। नारी की गरिमा में स्वयं भगवान श्री राम कहते हैं कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है।

इस संसार में माता ही प्रथम गुरु होती है। महाराणा प्रताप तथा छत्रपति शिवाजी को महानता के शिखर तक पहुँचाने में उनकी माताओं का ही योगदान है। यही तो नारी का नारीत्व है कि मां के रुप में वह जननी है तो पत्नी के रुप में सच्चे मित्र की भी भूमिका का निर्वहन करती है। वह स्नेहमयी बहन के रुप में भाई, मित्र तथा माता-पिता सबकी कमी को पूर्ण करती है तो पुत्री के रुप में एक शुभचिन्तिका के रुप में दृष्टिगत होती है।

किन्तु हाय रे पुरुष रुप मानव! तूने नारी का मूल्यांकन मात्र उसके सुन्दर एवं मांसल शरीर के आधार पर किया है। तू उसे अपने मनोविनोद एवं वासना-पूर्ति का साधन मात्र समझता है। अपनी वासना की पूर्ति के लिये तूं नारी जाति को मात्र भोग्या समझता रहता है और उसका शोषण करने के लिये बलपूर्वक उसे अपने हरम में जानवरों की तरह रखता रहा है। इतना ही नहीं, तूनें उसे बार-बार अपने सतीत्व की रक्षा के लिये अग्नि की लपटों के भस्मीभूत होने के लिये विवश किया है। याद रख! तेरी ही कृतघ्नता और आसुरी वृत्ति तेरे विनाश का मूल कारा बनेगी।

हे मातृ शक्ति! तूनें तो अपना सर्वस्व अपने पति के प्रति समर्पित किया किन्तु नियति का क्रूर चक्र यदि तुम्हें वैधव्य का जीवन जीने के लिये विवश करता है तो तुम्हारा अस्तित्व नगण्य सा हो जाता है। संसार तुम्हारी घोर अपेक्षा करता है। मैथिलीशरण गुप्त के स्वरों में तुम्हारी पीड़ा इन शब्दों में मुखरित होती है' अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी। आंचल में है दूध और आंखों में पानी।।

अथर्ववेद में कहा गया है कि -

इमम् नारी पतिलोकं निपद्यत् उत् मर्त्य प्रेतम्।
धर्मम् पुराणम् अनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं च इह धेहि।।
अर्थात् पति की मृत्यु के पश्चात् अपने पुराणम् कर्तव्य रुप धर्म का पालन करने वाली स्त्री को उसी सन्तान सहित धन की स्वामिनी बना दिया जाय।

हे नारी! तूं अबला नहीं सबला है। समस्त मानव जाति की निर्मात्री है। समाधि के उच्चतम शिखर तक पहुँचने के लिये संसार के सबसे बड़े योगी को भी वेद का कथन स्वीकार करना पड़ता है कि 'नारी भव' अर्थात् माधुर्य अंगना भाव को धारण करो क्योंकि इसके बिना न तो समर्पण की भावना आ सकती है और न समाधि में प्रवेश ही हो सकता है।

तूं ज्ञान के स्वरुप में महर्षि याज्ञवल्क्य को भी हतप्रभ करने वाली गार्गी है, तपस्विनी के रुप में अपाला है, घोषा और विश्ववारा के रुप में वैदिक ऋषियों की भांति मन्त्रार्थद्रष्टा है। भक्ति की आदर्श स्वरुपा मीरा के रुप में तूं पृथ्वी की मुकुटमणि है। ब्रह्मवादिनी मदालसा के रुप में तेरी गायी हुई यह लोरी प्रत्येक भारतीय को उत्प्रेरित करती रहती है - 'शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि। संसारमाया परिवर्जितोऽसि।

तुम ही प्रेम की प्रतिमूर्ति राधा हो किन्तु अन्याय के प्रतिकार के लिये जब तु अस्त्र-शस्त्र उठाती हो तो दुर्गावती और लक्ष्मीबाई के स्वरुप में दिखायी देती हो। आसुरी शक्तियों के उन्मूलन के लिये तुम दुर्गा और काली हो। तुम विद्या की अधिष्ठात्री सरस्वती हो, ऐश्वर्य की स्वामिनी लक्ष्मी हो और शक्ति की स्रोत स्वरुपा पार्वती हो। तुम्हारे बिना तो त्रिदेव भी शोभाहीन प्रतीत होते हैं। यदि आत्मज्ञ पुरुष स्वयं को नारायण के रुप में देखते हैं तो तुम नारायणी क्यों नहीं हो?

पंचकन्याओं 'सीता, अनुसुइया, सावित्री, मन्दोदरी और तारा' से यह संसार सुशोभित है। तुम यतिवर लक्ष्मण को उनके कर्तव्यपथ में सहायक बनने वाली उर्मिला हो तो अपने आंसुओं को छिपाकर सिद्धार्थ को बुद्धत्व की ओर अग्रसर करने वाली यशोधरा हो।

प्रकृति का सम्पूर्ण आकर्षण तुम्हारे शरीर में प्रतिबिम्बित होता है जिससे सामान्य पुरुष भ्रमित हो जाते हैं। अपने शारीरिक बल के अभिमान और संकुचित बुद्धि के बन्धन में एक वर्ग तुम्हें बुर्के में छिपाकर रखना चाहते हैं और तीन तलाक तथा हलाला जैसी कुप्रथाओं में कैद करना चाहते हैं तो दूसरा वर्ग तुम्हें न तो वेदों का ज्ञान प्राप्त करने देना चाहते हैं और न तुम्हें व्यास गद्दी पर ही बैठने देते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि ऋग्वेद का आठवां मण्डल तो तुम्हारे ब्रह्मा बनने का उद्घोष इन शब्दों में करता है कि 'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ' । क्या ज्ञान के शत्रुओं को यह पता नहीं है कि बिना स्त्री के कोई भी पुरुष अपना कोई भी याज्ञिक कर्मकाण्ड पूरा नहीं कर सकता है।

वैदिक काल के ह्रास के पश्चात् ही नारी का उत्पीड़न प्रारम्भ हो गया। विदेशी आक्रान्ताओं के लिये नारी मात्र एक खिलौना रही है। इस अन्धयुग में नारियों की चीखें सुनने वाला कोई नहीं था। नारी के शरीर को नोंच नोंच कर अपने हवस की सन्तुष्टि करने वाले दरिन्दे यह नहीं सोचते हैं कि जिस नारी के साथ तुम ऐसा व्यवहार कर रहे हो, उसी के कारण तुम इस संसार में पैदा हो सके हो।

हे मातृशक्ति नारी! अपने ऊपर होने वाले अत्याचार की पीड़ा से अपने हृदय को अत्यधिक व्यथित न करो। अपने आंसुओं को पोंछ लो और अपने स्वरुप को पहचानो। तुम कितनी महान हो, इसका अनुमान इसी से लग जाता है कि राम और कृष्ण के नाम से पहले तुम्हारी ही प्रतिनिधस्वरुपा सीता और राधा का नाम लिया जाता है। सीतां एवं द्रौपदी के आंसुओं ने लंका तथा कुरुक्षेत्र में रक्त की नदियां प्रवाहित कर दी। तुम नारायण की शक्ति स्वरुपा नारायणी हो।

समस्त आध्यात्मिक समाज तुमसे यही अपेक्षा करता है कि तुम अपनी गरिमा की पहचान करते पाश्चात्य संस्कृति के पीछे नहीं भागोगी और ऐसे महापुरुषों को जन्म दोगी जो संसार में सत्य धर्म की स्थापना करेंगे। तुम्हारे अतिरिक्त यह कार्य अन्य किसी से भी नहीं हो सकेगा। समाज तथा राष्ट्र का सृजन और विनाश तुम्हारे ही हाथों में है। तुम्हीं सबकी आशा हो।

संक्षेप में बस इतना ही कहा जा सकता है कि -
नारी तुम श्रद्धा हो केवल, विश्वास रजत पगतल में।
पीयुष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल, वडोदरा